OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 11

दस विकारों को हरा, मनाओ दशहरा

शाहुवाडी-मलकापुर। विधायक बी.डी.ओ.उदय पवार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.वंदना। साथ हैं ब्र.कु.वर्षा।

गिदडवाडा-पंजाब। एस.डी.एम.मनदीप कौर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.रजनी।

आणंद-सरदारबाग। कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. एन.सी. पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.वैशाली।

व्यावरा-म.प्र.। साध्वी अनुराधा नागर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रुक्मणि। साथ हैं टेलीफोन अधिकारी जगदीश गुप्ता तथा अन्य।

भुवनेश्वर। सास्वत मिश्रा,आइ.ए.एस.,सी.एम.डी., ओ.एम.सी. को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिजय। साथ हैं ब्र.कु. बिनी तथा अन्य ब्र.कु. बहने व भाई।

इन्दौर-राजगढ़। 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका सी.एम.ओ. रवि प्रकाश नायक, ज्योतिषी जय कृष्ण त्रिपाठी, ब्र.कु.मधु तथा ब्र.कु.नीलम।

पौराणिक कथाओं में उल्लेख है कि जब असुरों के अनाचार और अत्याचार से धरा प्रकम्पित हो उठी थी तभी शक्ति स्वरूपणी दुर्गा ने उनका विनाश किया और देवत्व की स्थापना की। कहा जाता है कि उसी काल में देव-विजयी रावण पर राम ने विजय प्राप्त की। अब एक संकल्प चलता है कि राम और रावण के युद्ध को इतनी वरियता क्यों दी जाती है? क्या ये युद्ध वाकई हुआ था या क्या ये कल्पना मात्र है? इसके लिए संत तुलसी दास कृत रामचरितमानस में कुछ आध्यात्मिक बातें ऐसी हैं जिससे सिद्ध होता है कि ये एक मानसिक ऊपज है। जब राम रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए जाते हैं तो उन्हें साक्षात्कार होता है कि रावण को मारने के लिए आध्यात्मिक रथ की आवश्यकता होगी। उस आध्यात्मिक रथ के बारे में कुछ इस तरह बताया गया है कि जैसे,

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

बल विवेक दम पर हित धोरे। क्षमा कृपा समता रजु जोरे।।

कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। एही सम विजय उपाय न दूजा।।

उपरोक्त चौपाइयों में क्षमा, दया, संतोष, समता, विवेक, कवच के रूप में गुरु की पूजा आदि का वर्णन है जो कि सूक्ष्म हैं न कि स्थूल। अत: तुलसीदास का कहना था कि रावण आंतरिक विकार का प्रतीक है और उसके लिए भी उन्होंने कुछ दोहे लिखे हैं जिसका अभिप्राय है, मोह रावण है, अहंकार रूपी उसका भाई कुम्भकरण है और सुख-शांति नष्ट करने वाला कामरूपी मेघनाद है।

मोह दश मौलि तद् भ्रात अहंकार, पाकारि जित कात विश्राम हारी।

एक बात जो प्राय: कही और मानी जाती है कि रावण कोई दस सिर वाला व्यक्ति रहा होगा। लेकिन आज का मेडिकल साइंस इस बात को नहीं मानता। वो कहेगा कि दस सिर वाला कोई मनुष्य हो ही नहीं सकता। क्योंकि मनुष्य के शरीर के सभी भाग जिस प्रकार मस्तिष्क से जुड़े हुए हैं और जिस जिस कार्य को वे करते हैं उसको जानने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात को नहीं मानेगा कि मानव तनधारी के दस सिर हो सकते हैं। इसके अलावा लंका देश के रहवासी का कहना है कि रावण नाम का राजा उनके यहाँ कोई हुआ ही नहीं। इसके अतिरिक्त 'रावण' और 'राम' दोनों नाम एक-दूसरे के विपरीत अर्थ रखते हैं। रावण का अर्थ है रुलाने वाला और राम का अर्थ है लुभाने वाला। इन्हीं तथ्यों को लेकर हम आगे बढ़ें तो सीता की उत्पत्ति खेत में दबे घड़े से मानी जाती है। लेकिन आज वंश की उत्पत्ति की क्रिया को लोग विवेक से देखते हैं और इसको वैज्ञानिकता के साथ जोड़ते हैं कि ऐसा हो नहीं सकता।

अगर लोगों की मान्यता को ही ले लें तो कहीं कहीं उवाच सुनने में आता है,

एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट-घट में लेटा।।

एक राम इस जग से न्यारा। वही राम है सबका प्यारा।।

आत्मा को भी राम के साथ जोड़ा जाता है और घट का अर्थ है शरीर। तो शरीर को

कहा जाता है कि साधारणत: बुत जीवित दुश्मन का ही जलाया जाता है। कभी लोग किसी विरोधी का या अन्य किसी जो उनके पक्ष में नहीं हैं उनका पुतला जलाते हैं। परंतु मरे हुए शत्रु का पुतला कभी नहीं जलाया जाता। वैसे ही रावण रूपी दस सिर वाले मनुष्य को एक अलंकारिक रूप से दर्शाया गया है। जिसमें दस विकारों को दस सिर के रूप में दिखाया गया है। उसी का पुतला जलाकर आज लोग इस बात को और साक्ष्य दे रहें हैं कि अभी भी रावण ज़िन्दा है। तो क्यों ना हम इसे समझें और समझकर विकारों रूपी रावण को जलाकर सच्ची विजयदशमी मनायें।

चलाने वाली शक्ति ही आत्मा राम है। वैसे ही इस जग से न्यारे परमात्मा को भी राम के साथ जोड़ा जाता है जो इस जगत के रचयिता हैं। दशरथ के बेटे राम की बात नहीं है यहाँ। यहाँ राम परमात्मा के रूप में हैं। कहा भी जाता है कि त्रेतायुगी श्रीराजा राम के राज्य में दैहिक दैविक और भौतिक ताप तो थे ही नहीं। तो इसका अर्थ हुआ कि वहाँ सभी सुखी थे, तो वहाँ रावण जैसे राक्षस की कल्पना कैसे की जा सकती है, और सीता जैसी देवी को कोई बुरी दृष्टि से देख सकता है?

इसी दृष्टिकोण से सारी कथा पर विचार किया जाये तो यह सारा संसार विषय सागर से घिरा होने के कारण आज दु:खी है। वैसे भी पूरा विश्व एक विशाल टापू, द्वीप या महाद्वीप है जो चारो तरफ पानी से घिरा हुआ है। प्रथमत: ये विश्व स्वर्णिम युग का था, धन-धान्य सम्पन्न था जिसे सोने की लंका कहा जाता था। जब नर नारी में मौलिक और नैतिक रूप से पतन हुआ तो धर्म-ग्लानि शुरु हो गई। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वश जब सभी नर नारी हुए तो इसी भाव को स्पष्ट करने के लिए रूपक अलंकार के रूप में दस सिर वाले रावण को दिखाया गया। चूंकि ये विकार दु:खी करने वाले या रुलाने वाले (रावण) हैं। कहा जाता है कि मनुष्य का मुख मन का दर्पण है और आज मनुष्य के चेहरे पर वो रावण पूरी तरह से दिखाई देता है।

जब मन को हर्षित करने वाले गुण लोप हो जाते हैं तो हर आत्मा रूपी सीता परमात्मा रूपी राम को पुकारती है, उसी को सीता द्वारा मर्यादा अथवा लक्ष्य की रेखा का अतिक्रमण करते हुए दिखाया गया है। उसी समय माया रूपी मारीच अथवा लोभ ने आत्मा रूपी सीता को हर लिया। अर्थात् रावण ने उन्हें बंदी बना लिया। इसलिए सभी को बंदी सम या बानर सम दिखाया जाता है। कहते हैं तब परमात्मा जिन्हें निराकार राम कहा जाता है और रामेश्वर 'शिव' भी कहा जाता है, ने अवतार लिया और बंदरों (बंद हो जिसका दर) की विशाल सेना ली अर्थात् उनकी बुद्धि खोली। अब आप बताइए कि क्या बंदर एक अनुशासन में कार्य कर सकते हैं। वे तो चंचल प्रवृत्ति के होते हैं, उनसे भला राम रावण का विध्वंश कैसे करेंगे? इसका अर्थ यह हुआ कि आज हम मनुष्य ही बंदर हैं जो मोह पाश में बंधे हुए हैं। उन्हें परमात्मा निराकार राम ने ज्ञान देकर अपना बनाया तथा उस सेना द्वारा दसों विकारों रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर आत्मा रूपी सीता को छुड़ाया। इन्हीं घटनाओं को चरितार्थ करने के लिए इतने सारे चरित्रों का वर्णन रामायण और रामचरितमानस में किया गया, क्योंकि कोई भी आत्मा और परमात्मा की कहानी ऐसे नहीं समझ सकता। आज देखिए तो हमारा शरीर एक पंचवटी के समान है जिसके अंदर पाँच तत्व हैं जिसको चलाने वाली आत्मा रूपी सीता को दस विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार (पुरुष) ईर्ष्या, निन्दा, घृणा, आलस्य और भय (स्त्री)) रूपी रावण ने हर लिया और आत्मा जीवन के लक्ष्य व मर्यादा की लक्ष्मण रेखा लांघ गई। एक वृत्तान्त है कि रावण के वश पंच तत्व थे। आज कलियुग में सभी वैज्ञानिक रूप से इतने सक्षम हैं कि बटन दबाने से पानी आ जाता है, वायब्रेशन से मोबाइल फोन चल पड़ते हैं, इशारे से पवन चल पड़ती है, तो इसका अर्थ यही हुआ ना कि हम सारे रावण हैं। ये भी कहा जाता है कि रावण ने एक ऐसी सीढ़ी बना ली थी जिससे वो चाँद पर जा सकता था, तो आज मनुष्यों ने भी अंतरिक्ष यान बना लिया है जिससे वे चाँद पर जा सकते हैं। आज कुम्भकरण जैसे आलसी और निद्रालु लोग भी हैं। आज 'राम' तो केवल नाम लेते हैं, मन तो 'काम' ही के अधीन है।

अत: आध्यात्मिक रूप से देखा जाए तो रावण अभी मरा नहीं है। अगर मर जाता तो उसका पुतला जलाने की ज़रूरत क्या है? आज रावण की तरह हर रोज़ अपहरण और बलात्कार जैसी घटनाएँ समाचार पत्रों में आती हैं, तो आज कौन ऐसा है जो रावण (काम और क्रोध) के वश नहीं है। अत: सही अर्थों में राम को अपने मन में बसाकर दस विकारों को ज्ञान रूपी बाण मारकर तथा उसे योग रूपी अग्नि में जलाकर सच्चा दशहरा मनायें।